स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम् ।

अनन्यशासनामुर्वीं शशासैकपुरीमिव ।।30।।

अन्वय स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम् अनन्यशासनाम् उर्वीम् एकपुरीमिव शशास।

अनुवाद (पृथ्वी के) चारों ओर का समुद्र तट ही जिसकी रक्षा की गोल दीवार है, स्वयं समुद्र ही जिसकी चारों ओर की (गहरी) खाई है और जिस पर (दिलीप को छोड़कर) किसी अन्य राजा का शासन नहीं है ऐसी (विस्तृत) पृथ्वी का दिलीप ने एक नगरी के समान (सरलतापूर्वक) शासन किया।

टिप्पणियां

प्राचीन भारत में प्रमुख नगर किले के रूप में होते थे। उनके चारों ओर रक्षा के लिए दीवार और गहरी खाई होती थी जिससे कोई शत्रु नगर में न घुस सके। इसी कारण से संस्कृत में 'पुर' शब्द 'नगर' और 'किला' दोनों अर्थों का वाचक है।

वेलावप्रवलयाम् वप्राः एव वलयाः इति वप्रवलयाः (कर्मधारय), वेला एव वप्रवलयाः यस्याः) (बहुव्रीहि) सा वेलावप्रवलया, ताम्। समुद्र तट ही जिसकी गोल प्राचीर (दीवार) है। वप्र-प्राचीर, वेला-समुद्रतट। जैसे प्राचीन नगरों के चारों ओर प्राचीर होता था वैसे ही पृथ्वी भी नगर है जिसके चारों ओर के समुद्र प्राचीर के समान हैं। यह 'उर्वीम्' का विशेषण है।

परिखीकृतसागराम् न अपरिखाः परिखाः सम्पद्यमानाः (''अभूततद्भावे च्विः'') इति परिखीकृताः। परिखीकृताः सागराः यस्याः सा (बहुव्रीहि), परिखीकृतसागरा, ताम्। समुद्र ही जिस पृथ्वी रूपी नगर की खाई का काम करता है। परिखा-खाई। गहरे समुद्र के रूप में चारों ओर व्याप्त खाई वाली (पृथ्वी पर) जैसे किले के आकार के प्राचीन नगर के चारों ओर खाई बनी रहती है वैसे ही समुद्र जिस पृथ्वी के चारों ओर खाई का काम करता है ऐसी पृथ्वी पर। इस शब्द से राजा दिलीप की चक्रवर्तिता की ध्वनि प्राप्त होती है।

अनन्यशासनाम्:न अन्यः अनन्यः (नञ् तत्पुरुष)। अविद्यमानं अन्यस्य शासनं यस्याः सा (बहुव्रीहि), अनन्यशासना, ताम्। जिस पर दिलीप को छोड़कर और किसी राजा का राज्य नहीं है। दिलीप ही जिसका एकमात्र शासक है। अर्थात् महाराज दिलीप चक्रवर्ती शासक थे।

उर्वीम् पृथ्वी पर।

प्रस्तुत श्लोक का भाव यह है कि विस्तृत पृथ्वी पर अकेले शासन करते हुए रघुकुलमणि महाराज दिलीप को कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता था। जैसे एक छोटे नगर पर शासन करना होता है वैसे ही दिलीप बड़ी सुगमता से और अनायास ही समस्त भूमण्डल पर शासन करते थे। इसी बात को बताने के लिए कवि ने पृथ्वी के किले जैसे छोटे नगर के रूप में कल्पना की है। इस प्रकार के एक (छत्र) चक्रवर्ती साम्राज्य तथा

लोकोत्तर अद्वितीय यौवनाद्युपेत शरीर का भी त्याग महाराज दिलीप एक गाय (नन्दिनी) की रक्षा करने के लिए तत्पर थे। (देखिए रघुवंश द्वितीय सर्ग) इस प्रकार वे सचमुच रघुवंशी राजा थे।